क्रियायोग आश्रम व अनुसंधान संस्थान

संचालन द्वारा: योग सत्संग समिति/क्रियायोग सत्संग समिति

संस्थापक-अध्यक्ष : श्री गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम्

मातृ केन्द्र व मुख्यालय
झूँसी, इलाहाबाद- 211019
उत्तर प्रदेश, भारत
दूरभाष : 0532-2569 243
मोबाइल: 9415217277/81
ई-मेल:yogisatyam@hotmail.com

उत्तरी अमरीका केन्द्र :
योग फेलोशिप टेम्पुल
388 प्लेन्स रोड, किचनर, ओन्टोरिया
कनाडा, एन 2 आर 1 आर 8
दूरभाष : 001-519-696-3869
ई-मेल: kriyayoga.canada@yahoo

बेवसाइट: kriyayoga-yogisatyam.org

वर्तमान समय आरोही द्वापर का 313 वाँ वर्ष है

क्रम संख्या .... दिनाँक :

प्रकाशनार्थ

14 फरवरी, 2013 महाकुंभ क्षेत्र में मुक्ति मार्ग पर क्रियायोग का विशेष कार्यक्रम

अन्त:करण में ज्ञान की अनुभूति के बाद ही शास्त्रों को पढ़ें - स्वामी श्री योगी सत्यम्

14 फरवरी, 2013 इलाहाबाद । मुक्ति मार्ग पर सेवारत क्रियायोग शिविर में अन्तर्राष्ट्रीय संत स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने क्रियायोग के सिद्धान्तों पर प्रकाश डालते हुए स्पष्ट किया कि ज्ञान की अनुभूति का अभिप्राय किसी भी तथ्य को पढकर, सुनकर अथवा मानसिक, बौद्धिक तर्क वितर्क के द्वारा समझना नहीं है । ज्ञान की अनुभूति का अभिप्राय है स्वरूप तथा ब्रहमाण्डीय किसी भी रचना का सृजन, संरक्षण और परिवर्तन करने की अलौकिक शक्ति प्राप्त कर लेना । ज्ञान तीन प्रकार है । सृजन, संरक्षण तथा परिवर्तन का ज्ञान । स्वरूप तथा ब्रह्माण्ड की किसी भी रचना का इच्छानुसार सृजन, संरक्षण और परिवर्तन करने की अलौकिक शक्ति प्राप्त करना ही ज्ञान की अनुभूति है । अनेक ऋषिगण जो आत्मज्ञान की पूर्णता में स्थित थे, स्वरूप को हवा, पानी, प्रकाश, आकाश आदि तत्वों में इच्छानुसार रूपान्तरित करने के दैवीय ज्ञान से विभूषित थे । स्वामी सत्यम् महाराज जी ने आगे कहा कि क्रियायोग ध्यान के द्वारा स्वरूप में प्रकट होने वाले समस्त परिवर्तनों को परब्रह्म शक्ति के रूप में स्वीकार करते हुए उसमें गहन एकाग्रता प्रकट करने का अभ्यास करने पर साधक दैहिक, दैविक और भौतिक

तापों से मुक्त हो जाता है । क्रियायोग ध्यान के द्वारा मात्र बीमारियों का ही समापन नहीं होता है बल्कि स्वरूप का कायाकल्प हो जाता है । क्रियायोग ध्यान के द्वारा जैसे–जैसे बीमारियों का समापन होता है वैसे–वैसे साधक अलौकिक ज्ञान, शांति, शक्ति से विभूषित होने लगता है। क्रियायोग ध्यान की अनुभूति जब परमानन्द के रूप में प्रकट होने लगती है तब साधक के अंदर सुषुप्त अलौकिक शक्तियों का जागरण होने लगता है ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने स्पष्ट किया कि क्रियायोग ध्यान के द्वारा अन्तःकरण में ज्ञान के प्रकाशित होने पर ही शास्त्रों को पढना चाहिए जिससे शास्त्रों का सही अर्थ प्रकट हो सके। उन्होंने पतंजलियोगदर्शन में वर्णित आसन की वास्तविक अवस्था पर प्रकाश डालते हुए कहा कि महर्षि पतंजलि ने आसन को परिभाषित करते हुए कहा है ''स्थिर सुखम् इति आसनम्''। सुख की स्थिर अवस्था आसन है । पतंजलि योग दर्शनम् में कहीं भी नहीं कहा गया है कि शरीर को भिन्न–भिन्न मुद्राओं में बलपूर्वक तोडना–मरोडना आसन है । आसन के रूप में करायी जाने वाली तथाकथित क्रियाएॅ शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए हॉनिकारक है। स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने आगे कहा कि साधना की वह अवस्था जिसमें सुख स्थिर रहता है और जिसे परमानन्द की अनुभूति कहा गया है, आसन है । ऐसी अवस्था में साधक हर अवस्था में सुख दुःख की मायावी अनुभूति से उपर उटकर परमानन्द में निमग्न रहता है ।

मुक्ति मार्ग पर स्थित **क्रियायोग** शिविर के भव्य पण्डाल में भारत के अनेक प्रदेशों से आये हुए भक्तों के साथ–साथ अमरीका, कनॉडा, ब्राजील, रूस, गयाना, सिंगापुर, पोलैण्ड, आस्ट्रेलिया, फिनीलैन्ड, साउथ अफ्रीका, जर्मनी, इटली, लंडन आदि देशों से आये हुए साधक भारी संख्या में भाग लेकर शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक लाभ प्राप्त कर रहे हैं ।

क्रियायोग प्रशिक्षण एवं अभ्यास का कार्यक्रम प्रतिदिन कुम्भ मेला क्षेत्र में मुक्ति मार्ग पर प्रातः 8 बजे से 10 बजे तक तथा दोपहर 2:30 बजे से सायं 6 बजे तक और मोरी रोड पर महर्षि पतंजलि धाम परिसर में रात्रि 11 बजे से 1 बजे तक हिन्दी तथा ॲग्रजी भाषा में बडे ही प्रभावशाली रूप में चल रहा है ।

– योगमाता